आवरण से आचरण तक

आजकल मंदिरों और धार्मिक स्थानों में व्यक्तिगत शिष्टाचार के सम्बन्ध मे एक नई जागरुकता देखी जा रही है । यह शिष्टाचार विशेष रूप से आदर्श ड्रेस कोड को लेकर है। मंदिरों में प्रवेश करते समय आपका पहनावा कैसा हो, यह नया विषय नही है। लंबे समय से यह एक वाद विवाद का बिन्दु रहा है, विशेष रूप से महिलाओं के वस्त्र पुरूषों से ज्यादा महिलाओं में बहस का मुद्दा रहा हैं । पहले महिलाएँ मुख्यतः साडी पहनती थीं, तब साडी कैसे पहनी जाये यह अहम होता था । सीधे पल्ले की हो या उल्टे पल्ले की मुँह ढंका जाये या सिर, सिर कितना ढंका जाये आदि अनेक अवधारणाएं विवाद का विषय हुआ करती थीं । धीरे धीरे सलवार सूट का प्रवेश हुआ तो उस पर भी विवाद शुरू हो गए, पर समय के साथ लोगों ने उसे शालीन वेशभूषा के रूप में स्वीकार कर लिया और आज के समय के सबसे आरामदायक, सुविधाजनक पहनावे के रूप में यह घर घर में प्रचलित हो गया है। लेकिन वर्तमान पीढ़ी का आधुनिक पहनावा जीन्स टॉप, टीशर्ट आदि है । यह पीढ़ी इस पहनावे को सबसे आरामदायक महसूस करती है, इसलिये आज हर युवक युवती की यह पहली पसंद बन गया है। समय के साथ हमारी आवश्यकता भी बदली है। आज जीवन पहले की तरह स्लो नही, बहुत फास्ट हो गया है। पहले व्यक्ति धोती कुरता पहनकर पैदल या बैलगाडी पर आसानी से जाकर या अपनी दुकान पर गाव तकिया लगाकर आराम से बैठा रहता था । महिलायें भी साड़ी पहनकर घर के काम काज करती रहती थीं। पर आज समय और लोगों का लाइफ स्टाइल दोनों बदल गए हैं । आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में पहले के ये पहनावे सुविधाजनक नहीं है । आज अलग अलग

तरह के जॉब्स में ड्रेस कोड भी उन्ही के अनुसार आवश्यक हो गए है, ऐसे में हम किसी पर भी किसी विशेष ड्रेस पहनने, न पहनने की जोर जबरदस्ती कैसे कर सकते हैं ।

जहाँ तक मंदिर में किसी विशेष पहनावे को लेकर निर्देशित किया जाये, तो बुरा नही कहा जा सकता। इस बारे में कोई विवाद नही है कि मंदिर में पहनने वाले वस्त्र शालीन हो, गरिमामय हो, अभद्र और अश्लील न हो । और यह नियम पुरुष और महिलाओं दोनों पर समान रूप से लागू होना चाहिये । वस्त्रों की शालीनता पहनने वाले के तौर तरीके पर भी निर्भर करती है। अनेक महिलाऐं साड़ी जैसे शालीन पहनावे को व अनेक पुरुष मंदिर की धोती भी अभद्र तरीके से पहन लेते हैं । मंदिर में क्या पहन कर आया जाये और क्या नही इस नियम का पालन सामान्य स्थिति में तो किया जा सकता है । वास्तव में मंदिर जाने का संकल्प करना सबसे आवश्यक नियम माना जाता है । आदर्श स्थिति में व्यक्ति संकल्प लेकर मंदिर जाता है तो उसकी तैयारी भी वैसे ही होती है वो सही वेशभूषा धारण कर सही तरीके से द्रव्यादि लेकर मंदिर जाता है । किंतु वर्तमान समय में ऐसें लोगों की संख्या कम होती जा रही है । अधिकतर काम काजी पुरुष, महिलाऐं और युवतियां अपनी व्यस्त दिनचर्या में सुबह जल्दी जल्दी काम पर निकलते समय थोडा समय देव दर्शन कर जाना चाहते है। बड़े शहरों में तो यह और भी कठिनाई भरा है । आजकल अनेक संस्थानों के अपने विशेष ड्रेस कोड होते हैं जिसे पहन कर जाना मजबूरी है । ऐसे में किसी विशेष ड्रेस कोड का हवाला देकर उन्हें मंदिर में आने से रोकना कहाँ तक न्याय संगत होगा । कई बार तथाकथित जिम्मेदार लोग बच्चों को इतनी कठोरता से फटकारते है कि इससे हमारी कामकाजी पीढ़ी जो देव दर्शन की थोड़ी बहुत भावना रखती है, मंदिर आने से ही कतराने लगेगी । हमारी पहली प्राथमिकता युवा पीढी को मंदिर लाने की होना चाहिए जो कि मंदिरों से दूर होती जा रही है । आज हमारे मंदिरों में उपस्थित श्रद्धालुओं में कितने युवा होते है, सोचने का विषय है और वो किन परिस्थितियों में मंदिर आये हैं, जानना जरूरी है । वस्त्रों को लेकर हमारी कट्टरता कहीं इन मुट्ठी भर युवाओं को भी मंदिर से दूर न कर दे । सबसे पहली जरूरत बच्चों में मंदिर आने का भाव जगाना है । जब बचपन से ही बच्चे मंदिर आने का महत्व समझेंगे तो स्वतः ही यह शिष्टाचार भी उनमें आ जायेगा कि मंदिर की वेशभूषा कैसी हो । वस्त्रों के इस शिष्टाचार के साथ ही बच्चों और युवाओं में सबसे जरूरी है मंदिर में और बाहर उनके आचरण की शुद्धि का । वास्तव में हम आज अपने बच्चों को आगे बढने, तरक्की करने, उत्तम सफलता प्राप्त करने के लिए जितना प्रेरित करते है, क्या उन्हें उत्तम आचरण सीखने की प्रेरणा दे पा रहे हैं । अपने जॉब, कार्य क्षेत्र में निष्ठा, ईमानदारी से काम करना, कमीशन, रिश्वत से दूर रहना, सच्चाई का साथ देना, महिलाओ का सम्मान करना आदि गुणों की सीख देना आज के माता पिताओं की नजर में गैर जरूरी हो गया है । आज हम ऊपरी आवरण पर जितना हो हल्ला मचा रहे है उतना भीतरी शुद्धता के लिए भी करें तो हमारे अनेकानेक दाग धुल जाएँ । हमारा जैन धर्म आंतरिक शुचिता के लिए जाना जाता है किंतु आज हर अच्छे बुरे कर्मो में जैन बंधुओं का कहीं न कही लिप्त होना न केवल धर्म के मूल सिद्धांतो पर वरन पूरे जैन समाज पर धब्बा है। इसके पीछे कहीं न कही हमारी अपनी चारित्रिक दुर्बलता है। आज हममे से कितने लोग अपने बच्चों को इस तरह के सद्गुणों का परिचय कराते है या प्राथमिकता देते हैं । बच्चों को नवकार की शिक्षा के साथ चारित्रिक विकास की भी सीख दी जानी चाहिए ताकि वे न केवल सच्चरित्र बन कर परिवार और समाज का नाम ऊंचा करें साथ ही साथ देश के सुयोग्य नागरिक भी बनें ।

शब्द जाल प्रतियोगिता–14

शब्द जाल प्रतियोगिता 14 में कुछ खेलों के नाम छिपे है । जिन्हें आपको दस खेलों के नाम ढूँढ़ना है । उदाहरण – BOXING

C	L	M	K	A	B	A	D	D	I	N	O	B
O	K	H	O	L	C	D	M	N	P	R	A	L
B	A	H	O	C	K	E	Y	P	O	D	L	M
O	B	B	F	N	C	K	I	N	M	S	T	Q
X	J	L	K	O	P	R	N	I	L	R	P	S
I	L	T	P	P	O	K	N	M	S	T	D	C
N	K	P	E	S	N	T	P	L	M	M	N	K
G	C	L	M	N	O	K	B	G	H	C	L	S
K	H	P	T	N	N	M	G	A	K	Y	M	N
P	E	R	C	K	B	I	H	S	L	C	T	R
R	S	T	R	K	C	L	S	T	M	L	S	T
M	S	W	I	M	M	I	N	G	K	I	P	Y
P	R	L	C	D	D	K	K	L	M	N	N	P
N	M	M	K	J	F	R	R	T	S	G	L	M
L	D	N	E	T	R	N	S	P	R	T	Q	P
N	S	C	T	L	S	M	M	L	T	N	R	S

प्रविष्टि निम्नलिखित पते पर भेजें – **'गोलालारीय दर्शन' 16, महारानी रोड, इन्दौर या 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर** । प्राप्त सही प्रविष्टियों का ड्रा निकालकर प्रथम 5 विजेताओं को के नाम निकालकर आगामी अंक में उनके फोटो भी प्रकाशित किये जायेंगे। * **नियम** – प्रतियोगिता सभी आयु वर्ग महिला / पुरुष / बच्चों के लिए है। प्रविष्टि भेजने की **अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2016** सही जवाब के साथ प्रतियोगी परिवार प्रमुख का नाम, टेलीफोन नंबर एवं प्रत्याशी का नवीन फोटो लगाकर पूर्ण पता मय पिनकोड के साथ अवश्य भेजें। संपादक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा। अपूर्ण जानकारी होने पर प्रविष्टी को निरस्त किया जा सकता है ।

सोशल मीडिया से...

एक पाँच छै साल का मासूम सा बच्चा अपनी छोटी बहन को लेकर मंदिर के एक तरफ कोने में बैठा, हाथ जोड़कर भगवान से न जाने क्या मांग रहा था । कपड़े में मैल लगा हुआ था मगर निहायत साफ, उसके नन्हे नन्हे गाल आंसूओं से भीग चुके थे । बहुत लोग उसकी तरफ आकर्षित थे और वह बिल्कुल अनजान अपने भगवान से बातों में लगा हुआ था । जैसे ही वह उठा एक अजनबी ने बढ़कर उसका नन्हा सा हाथ पकड़ा और पूछा – 'क्या मांगा भगवान से' । उसने कहा – 'मेरे पापा मर गये है, उनके लिए स्वर्ग, मेरी माँ रोती रहती है उनके लिए सब्र, मेरी बहन माँ से कपड़े सामान मांगती है उसके लिए पैसे'। 'तुम स्कूल जाते हो' अजनबी का सवाल स्वाभाविक सा सवाल था । 'हाँ जाता हूँ' उसने कहा । 'किस क्लास में पढ़ते हो' ? अजनबी ने पूछा । 'नहीं अंकल पढ़ने नहीं जाता, मां चने बना देती है वह स्कूल के बच्चे को बेचता हूँ, बहुत सारे बच्चे मुझसे चने खरीदते हैं, हमारा यही धंधा है' बच्चे का एक एक शब्द मेरी रुह में उतर रहा था । 'तुम्हारा कोई रिश्तेदार' न चाहते हुए भी अजनबी बच्चे से पूछ बैठा । 'पता नहीं', माँ कहती है गरीब का कोई रिश्तेदार नहीं होता, माँ झूठ नहीं बोलती, पर अंकल, मुझे लगता है मेरी माँ कभी कभी झूठ बोलती है, जब हम खाना खाते हैं हमें देखती रहती है, जब कहता हूँ माँ तुम भी खाओ, तो कहती है मैंने खा लिया था, उस समय लगता है झूठ बोलती है'। 'बेटा अगर तुम्हारे घर का खर्च मिल जाये तो पढ़ाई करोगे?' 'बिल्कुल नहीं' 'क्यों' 'पढ़ाई करने वाले गरीबों से नफरत करते है अंकल'। हमें किसी पढ़े हुए ने कभी नहीं पूछा – पास से गुजर जाते हैं, अजनबी हैरान भी था और शर्मिन्दा भी। फिर उसने कहा – 'हर दिन इसी मंदिर में आता हूँ, कभी किसी ने नहीं पूछा – यहां सब आने वाले मेरे पिताजी को जानते थे – मगर हमें कोई नहीं जानता । ''बच्चा जोर जोर से रोने लगा' अंकल जब बाप मर जाता है तो सब अजनबी क्यों हो जाते हैं?'' मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था और ना ही मेरे पास बच्चे के सवाल का जवाब है । ऐसे कितने मासूम होंगे जो हसरतों से घायल हैं । बस एक कोशिश कीजिये और अपने आसपास ऐसे जरुरतमंद व्यक्तियों, बेसहाराओं को ढूंढ़ियें और उनकी मदद कीजिये.... मंदिर में सीमेंट या अन्न की बोरी देने से पहले अपने आस पास किसी गरीब को दखे लेना शायद उनको आटे की बोरी की ज्यादा जरुरत हो ।

कुछ समय के लिए गरीब बेसहारा की आंख में आंख डालकर देखे आपको क्या महसूस होता है । 'स्वयं में व समाज में बदलाव लाने का प्रयास जारी रखें।'